B.A History (H.) Sunita Kumari
Degree - II Paper - IV

सल्तनतकालीन लोगों की सामाजिक अवस्था का परीक्षण करें।
(Examine social condition during Sultanate Period.)

Ans. मुसलमानों से पूर्व भारत पर जितनी भी जातियों—यूनानी, शक, कुषाण, हूण आदि ने आक्रमण किया उन्हें हिन्दू संस्कृति ने आत्मसात् कर लिया तथा कुछ काल बाद वे जातियाँ भारत में घुल मिल कर अपना अस्तित्व खो बैठीं। परन्तु मुसलमान आक्रमणकारी एक विशिष्ट उद्देश्य लेकर भारत में प्रविष्ट हुए थे। उनका धर्म और उनकी संस्कृति पृथक थी। अत: हिन्दू संस्कृति द्वारा उनका समन्वय करना नितांत असम्भव था। दोनों के बीच बहुत से मतभेद थे। हिन्दुओं का बहुदेववाद तथा मूर्तिपूजा इस्लाम के कट्टर एकेश्वरवाद तथा निराकार ब्रह्म से किसी भी प्रकार मेल नहीं खाता था। इस्लाम धर्मावलम्बियों में बराबरी और भाईचारे के सिद्धांत के साथ हिन्दुओं से प्रचलित जातिप्रथा और छुआछुत में भारी विषमता परिलक्षित होती थी। हिन्दुओं में अन्तर्विवाह, सहभोज और विधवा-विवाह के निषेध को मुसलमान गलत मानते थे, क्योंकि इस्लाम में तलाक, औरतों के पुनर्विवाह तथा कुछ प्रतिबन्धों के अलावा विवाह की पूरी स्वतंत्रता थी। उनमें उत्तराधिकार के नियमों, मृतकों के संस्कार, पोशाक, भोजन और स्वागत के ढंग भी अलग-अलग थे।

इस प्रकार की विरोधी संस्कृतियों तथा धर्मों का सम्मिश्रण इससे पूर्व कभी नहीं हुआ था। इसीलिए आरम्भ में दोनों वर्गों में भेदभाव की एक चौड़ी खाई थी जिसके एक ओर शासक-वर्ग था और दूसरी ओर शासित वर्ग। परन्तु धीरे-धीरे एक साथ रहने के कारण दोनों में सहमिलन, सम्मिश्रण तथा सामंजस्य की भावनाएँ उत्पन्न होनी आरम्भ हुई। हिन्दुओं की जाति-प्रथा के अनुसरण पर मुसलमानों में भी अनेक जातियाँ बन गई, जैसे, शेख, सैयद, मुगल, पठान, शिया, सुन्नी इत्यादि।

पूर्व मध्यकाल/सल्तनत काल में सामाजिक दशा

सल्तनत-काल में लोगों की सामाजिक अवस्था निम्नानुसार थी—

1. सामाजिक ढाँचा : सुल्तानों के शासन-काल में भारतीय समाज मुख्य रूप से दो भागों में बँटा हुआ था—(i) मुस्लिम समाज तथा (ii) हिन्दू समाज। मुस्लिम समाज वास्तव में शासक वर्ग था, जबकि हिन्दू समाज शासित वर्ग था।

(i) मुस्लिम समाज : मुस्लिम समाज दो वर्गों में विभक्त था—(a) विदेशी मुसलमान तथा (b) भारतीय मुसलमान।

(a) विदेशी मुसलमान : इस वर्ग में तुर्क, ईरानी, अरब, अफगान, हब्शी, मिस्री आदि विदेशी मुसलमान थे। इनका समाज में सबसे ऊंचा स्थान था। यह वर्ग समाज का अत्यन्त सम्मानित एवं प्रभावशाली वर्ग था। यह भारत का शासक वर्ग था। राजसत्ता वास्तव में इसी वर्ग के मुसलमानों के हाथों में थी। राज्य के उच्च एवं महत्वपूर्ण पदों पर इसी वर्ग के लोगों को नियुक्त किया जाता था। अत: समाज एवं राजनीति में यह वर्ग बड़ा प्रभावशाली बना हुआ था।

(b) भारतीय मुसलमान : वास्तव में पहले ये हिन्दू थे परन्तु बाद में प्रलोभन अथवा शक्ति के बल पर मुसलमान बना लिए गए थे। परन्तु इन भारतीय मुसलमानों को विजेता मुसलमानों की श्रेणी में सम्मिलित नहीं किया गया। विदेशी मुसलमानों के समान उन्हें विशेषाधिकार एवं सुविधाएँ भी प्राप्त नहीं थीं। भारतीय मुसलमानों को शासन और समाज में बराबरी का स्थान नहीं दिया गया। भारतीय मुसलमानों को उच्च एवं महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त नहीं किया जाता था। केवल कुछ ही भारतीय मुसलमानों को उच्च पदों पर नियुक्त किया गया।

(c) मुस्लिम समाज के अन्य वर्ग : मुस्लिम समाज के अन्य वर्ग निम्नलिखित थे—

1. सुल्तान : सुल्तान का समाज में अत्यधिक प्रभावशाली स्थान था। वे ठाठ-बाटपूर्वक रहते थे। उनके अनेक महल, हरम, दास-दासियाँ तथा नौकर-चाकर होते थे। वे प्राय: विलासप्रिय होते थे तथा उनके हरम में अनेक स्त्रियाँ तथा रखैल होती थीं। उनका दरबार बड़ा वैभवपूर्ण होता था। दरबार में अमीर-उलेमा आदि रहते थे। दरबार में कवि, गायक, विदूषक आदि भी होते थे। बलबन का दरबार अपने वैभव के लिए प्रसिद्ध था। राज्य में सुल्तान के दरबारियों का बड़ा गौरवपूर्ण स्थान होता था।

2. अमीर-वर्ग : समाज में अमीर-वर्ग को भी महत्वपूर्ण एवं सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। अमीरों की कई श्रेणियाँ थीं—जैसे खान, मलिक और अमीर। 'खान' की उपाधि सर्वोच्च थी। 'खान' के बाद दूसरी उपाधि 'मलिक' की होती थी तथा उसके बाद 'अमीर' की। अमीर शब्द का प्रयोग राज्य के सभी सैनिक तथा असैनिक पदाधिकारियों के लिए होता था।

अमीरों का अधिकांश समय या तो युद्धों में या आमोद-प्रमोद में व्यतीत होता था। उनके घरों में काम करने के लिए अनेक दास-दासियाँ होती थीं। उनके हरम में भी अनेक स्त्रियाँ और रखैल होती थीं। हरम में स्त्रियों की सेवा के लिए हिजड़े रखे जाते थे। अमीर-वर्ग के पास अतुल धन-सम्पत्ति होती थी और उनका जीवन भी बड़ा विलासितापूर्ण होता था।

3. उलेमा-वर्ग : उलेमा-वर्ग में धर्माचार्य, सैयद, पीर आदि होते थे, जो धर्म यात्री, न्याय संबंधी तथा धर्म संबंधी पदों पर नियुक्त थे। ये लोग प्राय: मुस्लिम विधि, तर्क, इस्लामी साहित्य, हदीस, कलाम आदि के अच्छे ज्ञाता होते थे। समाज में इनका भी बड़ा प्रभावशाली स्थान था। इनकी प्रतिष्ठा सुल्तान की धार्मिक प्रतिष्ठा पर निर्भर करती थी। अलाउद्दीन खिलजी तथा मुहम्मद तुगलक ने उलेमा-वर्ग पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया था तथा उन्हें राजनीतिक क्षेत्र में हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं दी थी, परन्तु फिरोज तुगलक के समय में उलेमा-वर्ग का राजनीति तथा प्रशासन में प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया था।

4. दास-वर्ग : समाज में दास-वर्ग का सबसे निम्नतम स्थान था। युद्ध-बन्दियों को गुलाम बनाने की परम्परा थी। मालिक का दासों पर पूर्ण नियंत्रण रहता था। वे अपने मालिकों के आश्रित होते थे। मालिक अपनी इच्छानुसार उनका प्रयोग कर सकते थे। परन्तु योग्य गुलामों की स्थिति अच्छी थी।

(ii) हिन्दू समाज : हिन्दू समाज में जाति प्रथा प्रचलित थी। वे अनेक जातियों और उपजातियों में विभाजित थे। मुसलमानों के आगमन ने हिन्दुओं की जाति प्रथा के नियमों को और भी अधिक कठोर बना दिया था। हिन्दुओं में ऊँच-नीच, छुआछुत, जादू-टोने में विश्वास, बलि-प्रथा आदि कुरीतियाँ प्रचलित थीं। हिन्दुओं की दशा दयनीय थी। उन्हें प्रशासन में उच्च पदों पर नियुक्त नहीं किया जाता था। उनके साथ कठोर और अपमानजनक व्यवहार किया जाता था। उन्हें जजिया कर के अतिरिक्त अनेक प्रकार के कर कर चुकाने पड़ते थे जिससे उनकी आर्थिक स्थिति शोचनीय बनी हुई थी। वे बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण धारण नहीं कर सकते थे। उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता और अधिकार नहीं थे। उन्हें अपने धार्मिक रीति-रिवाजों और परम्पराओं का पालन करने की अनुमति नहीं थी। जीवन के हर क्षेत्र में हिन्दुओं के साथ पक्षपात और घृणा का व्यवहार किया जाता था। मुसलमान हिन्दुओं की कन्याओं का अपहरण कर लिया करते थे और उन्हें बलपूर्वक अपनी पत्नी बना लेते थे। मुसलमानों के निरन्तर अत्याचारों के कारण हिन्दू भाग्यवादी और अकर्मण्य हो गए थे।

हिन्दुओं को प्रशासन के उच्च पदों से वंचित कर दिया गया। मुस्लिम सुल्तानों ने हिन्दुओं को निम्न श्रेणी का नगारिक बना दिया था। उन्हें जजिया कर देने के लिए बाध्य किया जाता था। युद्ध में जितने स्त्री-पुरुष और बच्चे पकड़े जाते, उन्हें मुसलमान बना लिया जाता था।

2. दास-प्रथा : समाज में दास-प्रथा प्रचलित थी। गुलाम या दास रखना समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता था। जिस मुस्लिम परिवार के पास अधिक दास होते थे, वह प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली परिवार माना जाता था। सुल्तान और अमीर बड़ी संख्या में दास रखते थे। अलाउद्दीन खिलजी के पास 50,000 दास थे। फीरोज तुगलक के पास 1,80,000 दास थे। दासों का क्रय-विक्रय होता था। दासों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाता था। दास अपनी योग्यता तथा कठोर परिश्रम के बल पर उच्च पद भी प्राप्त कर सकते थे।

3. स्त्रियों की दशा : हिन्दू-समाज में स्त्रियों की दशा में काफी गिरावट आ गई थी। बाल-विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा आदि कुरीतियाँ प्रचलित थीं। मुसलमान हिन्दू कन्याओं का अपहरण कर लिया करते थे। अत: उन्होंने बाल्यकाल में ही अपनी कन्याओं का अपहरण कर लिया करते थे। अत: उन्होंने बाल्यकाल में ही अपनी कन्याओं का विवाह करना शुरू कर दिया था। सती प्रथा भी प्रचलित थी। यह प्रथा राजपूतों में अधिक प्रचलित थी। अनेक स्त्रियाँ अपने पति के शव के साथ चिता में जल कर अपने प्राण त्याग देती थीं। राजपूत स्त्रियों में जौहर प्रथा भी प्रचलित थी। स्त्रियों में पर्दा प्रथा भी प्रचलित थी। मुसलमानों के कारण हिन्दू स्त्रियों में भी पर्दा-प्रथा शुरू हो गई। मुसलमानों की कामुक दृष्टि से बचने के लिए हिन्दुओं ने भी पर्दे की प्रथा को अपना लिया। प्राय: एक ही स्त्री से विवाह किया जाता था। परन्तु धनी तथा सम्मानित व्यक्तियों में बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी। विधवाओं को पुन:विवाह का अधिकार न था। उनकी दशा बड़ी शोचनीय थी।

मुस्लिम समाज में भी स्त्रियों की दशा अच्छी नहीं थी। मुसलमानों में बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी। एक साधारण मुसलमान भी कम से कम चार स्त्रियों से विवाह कर सकता था। सुल्तानों, अमीरों, सरदारों के अन्त:पुर में सैकड़ों स्त्रियाँ रहती थीं। इसके अतिरिक्त उनके हरम में अनेक रखैलें तथा दासियाँ भी रहती थीं। मुसलमानों में पर्दा प्रथा अत्यधिक कठोर थी। बहुविवाह, पर्दा प्रथा तथा रखैल प्रथा, अशिक्षा आदि ने मुस्लिम स्त्रियों की दशा दयनीय बना दी थी। तलाक प्रथा भी प्रचलित थी। मुसलमान स्त्रियों को कुछ सुविधाएँ भी प्राप्त थीं। वे अपने पति की मृत्यु के बाद पुन:विवाह कर सकती थीं, अपने पति को तलाक दे सकती थीं, तथा अपने माता-पिता की सम्पत्ति में हिस्सा प्राप्त कर सकती थीं।

4. खान-पान : अधिकांश हिन्दू शाकाहारी थे। वे मांस का प्रयोग नहीं करते थे। वे गेहूँ, जौ, चावल, दूध, घी आदि का प्रयोग करते थे। परन्तु क्षत्रियों तथा शूद्रों में मांसाहार प्रचलित था। उत्सवों और त्यौहारों के अवसर पर अनेक प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन बनाये जाते थे। भोजन की शुद्धता तथा पवित्रता पर विशेष ध्यान दिया जाता था। मुसलमान मांस का खूब प्रयोग करते थे। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही शराब का प्रयोग करते थे।

5. वेशभूषा : लोग सूती, ऊनी तथा रेशमी सभी प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करते थे। धोती, अंगिया, चोली, पेटीकोट, चुनरी आदि के प्रयोग के साथ-साथ कुर्ता, पाजामा, अंगरखा आदि का प्रयोग होता था। स्त्री तथा पुरुष दोनों ही आभूषण पहनने के शौकीन थे। सोने, चाँदी जवाहरात आदि के आभूषण पहने जाते थे।

6. मनोरंजन के साधन : सल्तनत-काल में मनोरंजन के अनेक साधन थे। संगीत, नृत्य, नाटक, आखेट, चौपड़ आदि मनोरंजन के साधन थे। इसके अतिरिक्त कुश्ती, कबड्डी, पशु-पक्षियों के युद्ध आदि भी आमोद-प्रमोद के साधन थे। मेले तथा त्यौहार उत्साहपूर्वक मनाये जाते थे। हिन्दू होली, दीपावली, दशहरा आदि त्यौहारों को मनाते थे तथा मुसलमान ईद, शब्बेरात, नौरोज आदि मनाते थे। निम्नवर्ग के लोग मद्यपान और लोक नृत्य से अपना मनोरंजन करते थे। अमीरों और सरदारों में आखेट, मद्यपान, जुआ आदि मनोरंजन के प्रमुख साधन थे।